मानव संचेतना वादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

कक्षा-१

	शरीर अवयव, मानवीय गुण, स्वभाव, सम्बन्ध, कर्त्तव्य, दायित्व, आवश्यकता उपयोगिता एवं प्रयोजनीयता वादी शब्दों के साथ जैसा- अभय, करुणा आदि। अधिकाधिक सम्बन्धों में बर्तने वाली शब्दों की रचना जैसा अभय रहना, आदर करना, इंगित करना, उदय होना, इतिहास बनाना	अक्षर बोध	कक्षा-१ से ५ तक आज्ञा पालन पद्धति रहेगी मूल्य ① धीरता ② वीरता ③ उदारता	संख्या बोध	शरीर इन्द्रिय सम्बन्ध सहित संख्या बोध कराना जैसे - पाँच ऊँगली, पाँच इन्द्री आदि तीन मानवीय मूल्य आदि के द्वारा।

मूल्यांकन - पुस्तकादि की सुरक्षा व सद्उपयोग का किया गया प्रबोधन उसका आज्ञापालन का मूल्यांकन।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मानव सचेतना वादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

सम्बन्धों में वर्तन वाली चरित्र रूपी पाठ जैसा-माता बच्चों को समय-समय पर प्यार से सेवा करती है। बच्चे माँ का आज्ञापालन करते हैं आदि इसी प्रकार पिता और गुरु का आज्ञापालन करने के सम्बन्ध में और माता-पिता और गुरु से मिलने वाली सचेतना वादी पाठ।	सम्बन्धों की पहचान सम्बन्धों में वर्तन वाली चरित्र रूपी पाठ जैसा-माता बच्चों को समय-समय पर सेवा करती है। बच्चे माँ का आज्ञापालन करते हैं आदि।	कक्षा - 2 मूल्य ① धीरता ② वीरता ③ उदारता	वस्तुओं का सामान्य पहचान	पाठ्य सामग्रियों की पहचान उसकी उपयोगिता का बोध छोटे-2 पौधों की पहचान और उसका सामान्य उपयोग इसी के साथ संख्या का विस्तार बोध जैसा वस्तुओं की संख्या घटाने बढ़ाने के क्रम में पाठ

मूल्यांकन – पुस्तिका, सामग्री, स्थान की सुरक्षा और सदुपयोग का मूल्यांकन।

मानव संचेतना वादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

		स्नेह, कृतज्ञता, विश्वास जैसा व्यवहारकारी वाक्य रचना जैसा - साथियों के साथ विश्वास निर्वाह, गुरु, माता, पिता के साथ कृतज्ञता का निर्वाह भाई-बहन के साथ गौरव सम्मान का निर्वाह। सम्बन्धों में वर्तनेवाली मूल्य और चरित्रकारी पाठ	सम्बन्धों का सम्बोधन	कक्षा - 3 मूल्य ① धीरता ② वीरता ③ उदारता	वस्तुओं का सामान्य उपयोगिता का प्रबोधन, उपयोग क्रम का पहचान	विद्यार्थियों के उपयोग में आने वाली और व्यवहार में आने वाली जैसा - पुस्तिका आदि पाठ्य सामग्री, वस्त्र, आवास, अलंकार और वाहन आदि।		

मूल्यांकन - वस्तुएं, सामग्री, वस्त्र, अलंकार क्रम का सद् उपयोग और सुरक्षा और व्यवहार का मूल्यांकन।

मानव संचेतना वादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

		सम्बन्धों में वर्तनेवाली व्यवहारवादी पाठ जैसे-समय के साथ कोई बिमार पड़ने पर स्कूल जाने के साथ किसी से मिलने के सम्बन्ध में, भोजन, शयन आदि। मूल्य चरित्र और नैतिकता का अविभाज्यता उसका नित्यवर्तमान वादी पाठ जैसा - माँ विश्वास-पूर्वक अभिभाविक बच्चों को सेवा करने के रूप में चरित्र को और अभिभाविक वस्तुओं को बच्चों के हित में सदुपयोग और उसकी रखरखाव के रूप में सुरक्षा और नैतिकता को इत्यादि।	सम्बन्धों में वर्तने वाली चरित्र और व्यवहारवादी पाठ कर्तव्यों का प्रबोधन प्रबोधन	कक्षा - ४ मूल्य 1 धीरता 2 वीरता 3 उदारता	वस्तुओं की सामान्य उपयोगिता का परिचय आवश्यकता का प्रबोधन	मनुष्यत्व प्रकृति को पहचानने की क्षमता प्रत्येक विद्यार्थी में होने की सत्यता का पाठ जैसा - जीव जानवर, पौधे, वृक्ष जलवायु अग्नि आदि सभी प्रकृति का दृष्टा मनुष्य है।		

मूल्यांकन — शिक्षा सामग्री, अलंकार व कक्षा सामग्रियों की सुरक्षा सदुपयोग और कार्य व्यवहार का मूल्यांकन।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मानव संचेतना वादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

व्यवहार संचेतना स्पष्ट रूप, जैसा माता-पिता, भाई-बहन, पिता-पुत्र, गुरु-शिष्य और मित्र सम्बन्धों में वर्तमानकारी पाठ, वर्तमान के लिए प्रवर्तन। व्यवहार संचेतना की अनिवार्यता जैसा सहअस्तित्व के लिए सहकारिता और सहभागियता की अपरिहार्यता। कर्तव्य और दायित्व की पहचान जैसा उत्पादन कार्यों में कर्तव्य का, व्यवहार कार्य सेवा में दायित्व की पहचान स्वीकृति के लिए प्रवर्तन उसको वहन करने की आवश्यकता, उपयोगिता तथा प्रयोजनियता वादी पाठ।	सम्बन्धों में वर्तनेवाली स्थापित मूल्य एवं शिष्ट मूल्यों का बोध। परस्पर व्यवहार में वर्तने वाली चरित्र अर्थात मानव संचेतनावादी चरित्र का पाठ।	कक्षा - 5 मूल्य (1) धीरता (2) वीरता (3) उदारता	वस्तुओं की आवश्यकता एवं उसकी उपयोगिता का बोध, रासायनिक एवं भौतिक सीमा का ज्ञान	भौतिक और रासायनिक परिवर्तन, प्राण अवस्था से पदार्थावस्था, पदार्थावस्था प्राणावस्था में परिवर्तनशील रासायनिक एवं भौतिक सीमावर्ती प्रकृति का बोध। मानव उसका दृष्टा होने का ऐश्वर्य सम्पन्न इकाई के रूप में प्रबोधन।

मूल्यांकन - शाला, कक्षा, शिक्षा सामग्री, अलंकार सामग्रियां की सुरक्षा वस्तुपयोग, शाला और शाला से बाहर विद्यार्थियों का चरित्र - चित्र का मूल्यांकन।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मानव संचेतना वादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

कर्तव्य और दायित्व का वाहनकारी पाठ जैसा उत्पादन की आवश्यकता परस्पर सम्बन्धों में व्यवहार की अनिवार्यता। व्यवसाय और चरित्रकारी पाठ जैसा कृतज्ञता आदि स्थापित सम्बन्धों को मूल्यांपूर्वक और शिष्ट मूल्यों सहित सम्बन्धों के साथ वर्तने वाली पाठ, चरित्र का आकलन व्यवहार और व्यवसाय में प्रकाशित होने की तथ्यपूर्ण पाठ, समाज के चारों आयाम जैसे - संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था का अविभाज्य वर्तमान का प्रबोधन।	सम्बन्धों को वर्तनेवाली शिष्टता का पाठ व्यवसाय मूल्य व्यवहार	कक्षा - ६ (1) धीरता (2) वीरता (3) उदारता (4) दया नोट- छवीं से १०वीं कक्षा तक अनुशासन पूर्वक पाठ-पठन कार्य होगा।	प्राण व निष्प्राण कोशिकाओं का स्पष्ट ज्ञान कोशिकाएँ परस्पर संगठित होने का गुण अर्थात कोशिकाओं में समाहित रहने का स्पष्ट ज्ञान।	पदार्थावस्था में निष्प्राण कोशिकाओं के रूप में होने की सत्यता को स्पष्ट करना पदार्थावस्था का तात्पर्य मृत, पाषाण, मणि धातु और उनके समस्त विकारों से है। पदार्थावस्था विकसित होकर प्राणावस्था में होना और प्राणावस्था ह्रास होकर पदार्थावस्था में होने की यथार्थता को स्पष्ट करने वाली पाठ उसकी साक्षी में अन्यवनस्पतियाँ ह्रास होकर पदार्थों में अर्थात मिट्टि आदि में परिवर्तित होता हुआ दिखाना, प्रत्येक बीज इसी मिट्टि, गोबर, हवा, पानी और उजाला को पाकर अंकुरित, पल्लवित एवं परिवर्तित होता हुआ दृष्टान्त वादी पाठ।

मूल्यांकन - शाला और शालेय सामग्री परिवार और पारिवारी कार्य व्यवहार सामग्रियों का सदुपयोग एवं सुरक्षा का मार्गदर्शन व उसका मार्गदर्शन।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मानव संचेतनावादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

धीरता, वीरता, उदारता और दया की पहचान जैसा प्रत्येक व्यवसाय व व्यवहार कार्य और सेवा की दृढ़ता के रूप में धीरता को। ऐसी दृढ़ता से विचलित व्यक्ति को दृढ़ता प्रदान करने के रूप में वीरता को स्वयं की सुविधाओं को आवश्यकतानुसार दूसरों को प्रदान कर प्रसन्न होने के स्वरूप में उदारता को प्रतिवर्तित करने वाले पाठ और प्रवर्तन जीवन शक्तियों का सामान्य परिचय जैसा मन में होने वाली आशा, वृत्ति में होने वाली तुलन, चित्त में होने वाली चित्रण, बुद्धि में होने वाली संकल्प और आत्मा में होने वाली अनुभूति।	मानव मूल्य का परावर्तन ही स्थापित मूल्य और शिष्ट मूल्य में परावर्तित होने का प्रबोधन।	कक्षा - 6 1 धीरता 2 वीरता 3 उदारता 4 दया	परमाणु की पहचान गठन पूर्वक परमाणु होने परमाणु की पहचान, एक से अधिक परमाणुओं से रचना अणु, अणुओं से रचित पदार्थ पिण्ड की पहचान	परमाणुओं में विकास होने की सत्यता का पाठ, प्रत्येक परमाणु गठन पूर्वक परमाणु होने की पाठ, प्रत्येक परमाणु में एक से अधिक अंशों का गठन होने की सत्यता का स्पष्ट स्वरूप, प्रत्येक परमाणु में मध्यांश और उसके आश्रित अंश होने की सत्यता का पाठ। जो जितने बना रहता है अर्थात रचनाएं होती हैं वह उससे अधिक नहीं होती है, इस सिद्धान्त पर प्राण कोशिकाएं और निष्प्राण कोशिकाओं की रचना का पाठ प्रबोधन और कर्माभ्यास विचार शक्तियों का परावर्तन में व्यवसाय (अर्थात उपयोगिता एवं कला मूल्य को स्थापित करने का पाठ)।	

मूल्यांकन – शाला और शाला सामग्रियों का सदुपयोग व सुरक्षा, परिवार सम्पर्क एवं गुरुजनों के साथ किए गए व्यवहार का मूल्यांकन।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मानव संचेतनावादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि और आत्मा जैसे अक्षय बल और आशा विचार, इच्छा, संकल्प और अनुभव जैसी अक्षय शक्तियें संयुक्त स्वरूप जीवन, जीवन शक्तियों का परावर्तन एवं प्रत्यावर्तन की विशालता आवश्यकता उपयोगिता व ~~(प्रयोजि)~~ प्रयोजनियता का पाठ। देखना ही समझना, समझना ही देखना सिद्धान्त के आधार पर पहचान क्षमता और उसकी अक्षयता का पाठ। अक्षय बल और अक्षय शक्तियों का संयुक्त स्वरूप ही संचेतना होने का पाठ। संज्ञानीशीलता और संवेदनशीलता का संयुक्त प्रभावशीलन ही जीवन का पूरूवर्तन एवं प्रत्यावर्तन होने का पाठ। समाज के चारों आयाम और जीवन के चारों आयाम के सम्बन्ध में व्यवहारिक पाठ।	संचेतना के तृप्ति, क्रियाशीलता आचरणशीलता होने की पाठ	कक्षा - ८ 1 धीरता 2 वीरता 3 उदारता 4 दया	परमाणु में गठन पूर्ण होने की सत्यता का पाठ।	मनुष्येतर प्रकृति के साथ संतुलित सम्बन्ध की पहचान, व्यवसाय की अनिवार्यता, व्यवसाय पद में मनुष्य की विशेषता, व्यवसाय कर्ता, द्रष्टा और निर्माता मनुष्य ही होने की वैभव का पाठ। मनुष्य मनुष्येतर प्रकृति का ज्ञाता होने के मूल कारण में चैतन्य इकाई होने का पाठ। चैतन्य इकाई गठन पूर्णता से सम्पन्न एक परमाणु होने की पाठ। विचार शक्ति ही व्यवसाय पूर्वक मनुष्येतर प्रकृति में उपयोगिता मूल्य और कला मूल्य को निपुणता व कुशलता पूर्वक स्थापित करने की व्यवस्था का पाठ उसकी अनिवार्यता का ~~[illegible]~~ प्रबोधक।

मूल्यांकन - गाँव और मोहल्ला, शाला, परिवार में किया गया व्यवहार और चरित्र का मूल्यांकन शालेय एवं शाला परिसर, पारिवारिक वस्तुओं का सदुपयोग सुरक्षा का मूल्यांकन।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मानव संचेतना वादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

कक्षा ६

1 धीरता
2 वीरता
3 उदारता
4 दया

चैतन्य शक्तियों अर्थात आशा, विचार, इच्छा संकल्प और अनुभूतियाँ शरीर के द्वारा प्रकाशित होने की व्यवस्था का पाठ जैसा चैतन्य शक्तियों का संकेत मेधस में होना, मेधस के द्वारा संपूर्ण शरीर का संचालित होना फलतः कार्य व्यवहार संपादित होने का जो यथार्थ है उसे स्पष्ट करने का पाठ।

आधिक गति और शक्ति, कम गति और शक्ति के माध्यम से प्रकाशित होने की व्यवस्था का पाठ, संचेतना का परिष्कृत क्रम में मानव संचेतना का स्वरूप और न्यायपूर्ण व्यवहार का आधार होने का पाठ।

समाज मूल्यों का निर्वाह ही न्यायिक होने का पाठ और न्यायिकता ही दायित्व होने का पाठ।

जीवन का परिचय, जीवन मूल्य का परिचय जीवन मूल्य के अर्थ में मानव मूल्य मानव मूल्य के अर्थ में, व्यवहार मूल्य व्यवहार मूल्य के अर्थ में व्यवसाय मूल्य सार्थक होना ही सद् उपयोग और सुरक्षा होने का तथ्यपूर्ण पाठ। तन, मन, धन रूपी अर्थ का सद्‌उपयोग यही धर्मनीति (समाजनीति) सुरक्षा ही राज्यनीति होने की तथ्य का पाठ फलतः तन मन धन रूपी अर्थ का सद्‌उपयोग और सुरक्षा ही नैतिकता होने की यह चरित्र और मूल्य से अविभाज्य होने की तथ्य का प्रबोधन।

मनुष्य और जड़ चैतन्यात्मक प्रकृति का संयुक्त साकार रूप में होने का पाठ, न्यायपूर्ण जीवन कार्य व्यवहार विन्यास का प्रबोधन।

चैतन्य इकाई मूलतः एक परमाणु होने के कारण परमाणु प्रस्थापन विस्थापन से मुक्ति ही गठन पूर्णता का अर्थ होने के कारण गठनपूर्ण इकाई में अक्षयता स्वयं सिद्ध हो जाती है।

यांत्रिक रचना की सीमा उसकी पहचान, उसकी आक्षयशीलता। सम्पूर्ण रचनाएँ यांत्रिक होने का तथ्य यांत्रिकता अक्षयशील होने का तथ्य। सम्पूर्ण यांत्रिकता का दृष्टा सृष्टा और कर्ता का स्वरूप संचेतना होने का तथ्य, संचेतना पूर्वक ही उक्त सभी कार्य सम्पादित होने का तथ्य। अक्षय बल अक्षय शक्तियों का संयुक्त रूपी संचेतना होने के कारण संज्ञानीशीलता व संवेदनशीलता का अक्षयता का सिद्ध होने का पाठ, संचेतना के अभाव में दृष्टापन अर्थात अनुभव करने की क्षमता नहीं होती है।

अनुभव ही प्रमाण परम होने का पाठ।

मूल्यांकन — तन मन धन रूपी अर्थ की सुरक्षा और सद्‌उपयोग, सम्बन्धों में कृतकारित व अनुमोदित व्यवहार व्यवसाय के

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मानव संचेतना वादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

विवेक की परिभाषा और उसकी आवश्यकता एवं प्रयोजनियता का पाठ, बौद्धिक नियम सामाजिक नियम और प्राकृतिक नियम का पाठ, मूल प्रवृत्तियों का स्पष्ट स्वरूपों का प्रबोधन आवेशित गति और स्वभाव गति का प्रबोधन, जीवन की अविरत क्रियाशीलता और उसकी लक्ष्य का बोध। जीवनशक्तियों का परावर्तन प्रत्यावर्तन के फलस्वरूप जीवन कृति की नित्य अनिष्ट का पहचान।

राष्ट्र संचेतना और समाज संचेतना का अविभाज्य वर्तमान का पहचान, समाज का सार्वभौम अभिष्ट जैसा - समाधान, समृद्धि, अभय सहअस्तित्व का पहचान।

जीवन तृप्ति का पहचान जैसा - समाधान व प्रमाणिकता प्रमाण और प्रमाणिकता का नित्य वैभव का प्रबोधन उसकी नितान्त आवश्यकता उपयोगिता और प्रयोजनियता का पाठ।

समाज संचेतना के अर्थ में समाज संचेतना की पहचान जैसा व्यक्ति, परिवार, समाज राष्ट्र, अन्तरराष्ट्र नित्य सामरस्यता का सूत्र प्रमाणिकता व समाधान होने का पाठ।

जीवन की नित्यता और शरीर की नश्वरता का बोध, व्यवहारिक जीवन के लिए आवश्यकीय नियमों का बोध।

कक्षा - 10

मूल्य-

1 धीरता
2 वीरता
3 उदारता
4 दया

विकास के क्रम में चारों अवस्था की पहचान।

चारों अवस्थाओं में विकास का क्रम सम्बन्ध।

विज्ञान की परिभाषा।

समझ के ही मनुष्य देखता है जैसा जिसको जो देखता है उसकी सम्पूर्णता उनके आंखों में नहीं आती। प्रत्येक इकाई में रूप, गुण, स्वभाव, धर्म वर्तन का प्रबोधन।

आंखों में केवल रूप उसमें भी दो आयाम अर्थात रूप में आकार, आयतन, घन तीन आयाम होती हैं। उसमें से आकार आयतन ही आंखों में आती है। आकार आयतन से ज्यादा से ज्यादा 180 अंश देखने में आता है का पाठ। देखने से अधिक समझ प्रत्येक मनुष्य में होने का प्रबोधन।

जो जितना जानता है वह उतना चाह नहीं पाता जो जितना चाहता है वह उतना कर नहीं पाता जो जितना करता है वह उतना भोग नहीं पाता का पाठ।

प्रत्येक करनी भौतिक और रासायनिक सीमा में सम्पन्न होने की पाठ इन सब का दृष्टा जीवन होने का पाठ।

मूल्यांकन - तन, मन, धनात्मक अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा अनुशासन चरित्र सम्बन्धी मूल्यांकन।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मानव संचेतना वादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

मानवीयता की सीमा में मनुष्य अपराधों से मुक्ति होने तन, मन धनात्मक अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा करने योग्य है का पाठ। मानवीयता की सीमा में मनुष्य संयत होने के कारण आवश्यकताएँ सीमित होने की सत्यता का पाठ। मानवीयता की सीमा में मनुष्य की आवश्यकताएँ सीमित होने के कारण अधिक उत्पादन कम उपभोग योग्य होने की व्यवस्था का पाठ। प्रत्येक मनुष्य का अभीष्ट और लक्ष्य समाधान और प्रमाणिकता होने की यथार्थ का पाठ। मनुष्य के चारों आयाम व्यवसाय, व्यवहार, विचार और अनुभूति में सामरस्यता का आधार प्रमाणिकता व समाधान होने का पाठ। जीवन सामरस्यता पूर्ण मनुष्य ही पूर्णतया सामाजिक होने का पाठ। सामाजिकता मूल्य और मूल्यांकन न्याय सुलभ एवं विनिमय सुलभ होने की व्यवस्था का पाठ न्याय सुलभता व विनिमय सुलभता पूर्वक ही समाज के चारों आयाम संस्कृति, सभ्यता, विधि व व्यवस्था में परिपूर्ण सामरस्यता और उसकी निरन्तरता होने का पाठ।	मानवीयता ही मानव का स्वत्व होने का प्रबोधन स्वत्व ही स्वतन्त्रता और अधिकार का आधार होने का प्रबोधन	कक्षा - 11 मूल्य - 1 धीरता 2 वीरता 3 उदारता 4 दया 5 कृपा 6 करुणा नोट :- 11वी से 14 वी कक्षा तक स्वअनुशासन व्यवस्था रहेगी।	विकास के क्रम में गठनपूर्णता के अनन्तर जीवन में क्रियापूर्णता और आचरण पूर्णता होने और उसकी चिरन्तरता होने की सत्यता का प्रबोधन।	कारण, गुण, गणितपूर्वक निर्णय पाने की व्यवस्था का पाठ आँखों में जितना देखने को मिलता है उससे अधिक समझ में आता है का पाठ जो जैसा है उसे वैसा समझना ही स्पष्ट समझ अथवा सार्थक समझ होने का प्रबोधन। स्थिति सत्य वस्तुस्थिति सत्य वस्तुगत सत्य का प्रबोधन फलतः अस्तित्व कैसा है का पाठ साथ ही कितना है की आवश्यकता का पाठ। स्थिति सत्य - सत्ता में मैं संपृक्त प्रकृति ही अस्तित्व सर्वस्व होने का पाठ। वस्तुस्थिति सत्य में देश, काल, दिशा। वस्तुगत सत्य में रूप, गुण स्वभाव धर्म का अध्ययन। विज्ञान व तकनीकी सम्बन्धी उत्पादन कुशलता की निपुणता का प्रबोधन और कर्माभ्यास।

मूल्यांकन - व्यवहार में चारित्र अर्थात शिष्टता व्यवसाय में कर्माभ्यासशीलता तथा स्वानुशासन पूर्वक किया गया तन, मन, धनात्मक अर्थ का सद्उपयोग और

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मानव संचेतना वादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

कक्षा - १२

गुणात्मक विकास - अमानवीयता से मानवीयता, मानवीयता से अतिमानवीयता की ओर।
विकास का इतिहास में तीन चक्र जैसा प्राण पद, भ्रान्ति पद और देव पद तथा दिव्य पद का प्रबोधन।
संचेतना ही परिष्कृत अपरिष्कृत और परिष्कृति पूर्ण अस्तरों में प्रकाशित होने की सत्यता का पाठ।
परिष्कृत संचेतना ही मानव संचेतना होने, मानव संचेतना ही संज्ञानीयशीलता और संवेदनशीलता का संतुलित होने का पाठ।
संचेतना ही जागृत, अजागृत, अल्पजागृत प्रभेदों में प्रकाशित होने की व्यवस्था का।
जीवन जागृति ही जीवन का परमलक्ष्य होने का पाठ
जीवन जागृति आचरण पूर्णता और जागृति क्रम में ही क्रियापूर्णता की व्यवस्था का पाठ। मानव संचेतना पूर्वक ही सहअस्तित्वशील होने का पाठ फलतः तन, मन, धनात्मक अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा सम्पन्न होने का पाठ।
जीवन जागृति ही स्वानुशासित स्वानुशासन का, जागृति की अपेक्षा ही अनुशासन का और जागृति की भास ही साथ पालन का आधार होने का पाठ।

जीवन संचेतना का अस्तरों का स्वरूप। गुणात्मक परिवर्तन के क्रम में क्रिया व आचरण पूर्णता का प्रबोधन।

मूल्य -
1 धीरता
2 वीरता
3 उदारता
4 दया
5 कृपा
6 करुणा

सामान्य आकांक्षा व महत्वाकांक्षा की सीमा में वस्तुओं के निर्माण करने की आवश्यकता उसकी उपयोगिता व प्रयोजनीयता का प्रबोधन

उपयोगिता मूल्य व सुन्दरता मूल्य
उपयोगिता - आहार, आवास, अलंकार दूरश्रवण, दूरगमन, दूरदर्शन के प्रयोजन में होने की पाठ।
उपयोगी वस्तुओं के निर्माण में विज्ञान और तकनीकी पूर्वक प्रबोधन और कुशलता, निपुणता पूर्वक कर्माभ्यास।

मूल्यांकन - स्वानुशासन व उत्पादन क्षमता का मूल्यांकन।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मानव संचेतना वादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

सत्य में संपृक्त प्रकृति अस्तित्व,
अस्तित्व न घटती न बढ़ती,
अरूपात्मक अस्तित्व में ही
सम्पूर्ण रूपात्मक अस्तित्व ही
क्रियाशील है सम्पूर्ण इकाईओं
की परस्परता में अरूपात्मक
अस्तित्व दिखाई पड़ती है।
मूल्य स्वयं में जैसा विश्वास
स्वयं में अरूपात्मक अस्तित्व है
विश्वास पूर्वक ही, परस्पर मनुष्य सहअस्तित्वशील
ही मनुष्य ही मनुष्य का विकास
और ह्रास का प्रधान कारण है
जड़ चैतन्यात्मक प्रकृति सत्ता में
नियन्त्रित है, सत्ता ही व्यवसाय
काल में नियम, व्यवहार काल
में न्याय, विचार काल में
समाधान, अनुभव काल में
सत्य के नाम से जाना जाता
है का प्रबोधन का पाठ।
शिक्षा प्रदान करने के
लिए योग्यतानुसार उचित
कक्षाओं में अवसर प्रदान
करने की व्यवस्था का
पाठ और अभ्यास।

सत्य में संपृक्त
प्रकृति सत्य में
गर्भित होने
फलतः सत्य
में अनुभूत
पर्यन्त विकास
के लिए बाध्य
होने का पाठ

कक्षा - १२

मूल्य -
1 धीरता
2 वीरता
3 उदारता
4 दया
5 कृपा
6 करुणा

मध्यस्थ क्रिया
और मध्यस्थ
शक्ति का
प्रबोधन।

प्रत्येक परमाणु की मध्य में
स्थित अंश मध्यस्थ क्रिया
होने का पाठ।
मध्यस्थ क्रिया में ही
मध्यस्थ शक्ति का नित्य
प्रसारण होने का पाठ।
प्रत्येक इकाई सत्ता में
संपृक्त होने के कारण
ऊर्जामय फलतः आकर्षण
विकर्षण वादी गतिकार्य
विन्यास का प्रबोधन।
आकर्षण वादी कार्य
विन्यास ही अंशों को
परमाणु में गठित होने
परमाणुयें (atoms), अणुयें (molecules)
कण (particles) और कई कणों
का संयुक्त स्वरूप संगठित
पदार्थ पिण्ड के रूप में
होने की पाठ चाहे
प्राणकोशिकाएँ हों या
निष्प्राण कोशिकाएँ हों।
यह सभी रासायनिक
और भौतिक सीमा में होने
और जड़ चैतन्य का संयुक्त
का साकार, मनुष्य इन
सबका दृष्टा होने का पाठ
तथा सम्पूर्ण मापदण्ड का
निर्माता मनुष्य होने का पाठ।
उत्पादन क्रम विज्ञान व तकनीकी
पूर्वक कुशलता निपुणतावादी पद्धति से कर्माभ्यास

मूल्यांकन — स्वानुशासन तथा उत्पादन [illegible] का मूल्यांकन / शिक्षित करने की क्षमता

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मानव संचेतना वादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

मध्यस्थ क्रिया, मध्यस्थ शक्ति के आधार पर सम विषम का संतुलित होने का पाठ प्रत्येक आवेश सामान्य होने की साक्षियों का पाठ। काम, क्रोध, लोभ, मोह मद मात्सर्य होने का पाठ।

आवेशित गतियाँ मूल प्रवृत्तियाँ न होने, मूल प्रवृत्तियाँ जीवन का ऐश्वर्य होने का पाठ।

मनुष्य में मूल प्रवृत्तियाँ असंग्रह, स्नेह, विद्या, सरलता और अभय (विश्वास) है का पाठ।

परिष्कृत जीवन संचेतना में इन सभी मूल प्रवृत्तियाँ वर्तमान होने का पाठ।

विकास, विकास का इतिहास, जीवन रचना, जीवन जीवनीक्रम, जीवनीक्रम में जीवन जागृति, जीवन का कार्यक्रम ही सामाजिक कार्यक्रम सामाजिक कार्यक्रम ही जीवन का कार्यक्रम होने का पाठ।

प्रमाण ही पाठ, पाठ ही प्रबोधन का वस्तु, प्रबोधन ही समाधान के रूप में बोध होने का पाठ।

समाधानात्मक भौतिकवाद
व्यवहारात्मक जनवाद
अनुभवात्मक अध्यात्मवाद का पाठ।

कक्षा-11

मूल्य—
1 धीरता
2 वीरता
3 उदारता
4 दया
5 कृपा
6 करुणा

अस्तित्व की स्थिरता विकास की निश्चयता का पाठ।

सत्ता में संपृक्त प्रकृति ही अस्तित्व सर्वस्व।

अस्तित्व कैसा है सिद्ध हो जाता है और अस्तित्व कितना है की आवश्यकता सिद्ध नहीं होती।

आवश्यकता, उपयोगिता और प्रयोजन प्रयोजनीयता के अर्थ में ही पहचान होती है।

सत्ता = अरूपात्मक अस्तित्व
संपृक्त प्रकृति = रूपात्मक अस्तित्व

प्रकृति अनन्त इकाइयों का समूह है।

किसी भी एक इकाई का नाश नहीं होता।

सत्ता में संपृक्त प्रकृति नित्य सामरस्य है।

सत्ता में संपृक्त प्रकृति सत्ता में अनुभव पर्यन्त विकास के लिए बाध्य है।

विकास स्वयं में क्रम है। क्रम स्वयं में नियति है नियति स्वयं व्यवस्था है।

सत्ता में संपूर्ण प्रकृति नियन्त्रित है।

नियम ही न्याय, न्याय ही धर्म, धर्म ही सत्य, सत्य ही ईश्वर ईश्वर ही आनन्द है आनन्द ही जीवन है। जीवन ही नियम है।

(10 घंटे)

मूल्यांकन — स्वानुशासन, उत्पादन क्षमता, और शिक्षा प्रदान करने की अर्थात आज्ञापालन कराने की क्षमता का मूल्यांकन

मानव संचेतना वादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

कक्षा - 1

	शरीर अवयव, मानवीय गुण, स्वभाव सम्बन्ध, कर्तव्यदायित्व, आवश्यकता उपयोगिता एवं प्रयोजननियतावादी शब्दों के साथ जैसा- अभय, करुणा आदि. अधिकाधिक संबंधों में वर्तने वाली शब्दों की रचना जैसा- अभय रहना, आदर करना, इंगित करना, उदय होना, इतिहास बनाना ।	अक्षरबोध	कक्षा 1 से 5 तक आज्ञा पालन पद्धति रहेगी । मूल्य - 1. धीरता 2. वीरता 3. उदारता	संख्या बोध	शरीर इन्द्रिय संबंध सहित संख्या बोध, कराना, जैसे पांच उंगली, पांच इन्द्री आदि तीन मानवीय मूल्यों आदि के द्वारा	

मूल्यांकन:- पुस्तकादि को सुरक्षा व सदउपयोग का किया गया प्रबोधन उसका आज्ञापालन का मूल्यांकन ।

श्री भजनाश्रम,
श्री नर्मदाचल
पोष्ट: अमरकंटक
जिला-शहडोल (म. प्र.)

मानव संचेतना वादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

कक्षा: 2

संबंधों में वर्तने वाली चरित्र रूपी पाठ जैसे- माता बच्चों को समय समय पर प्यार से सेवा करती है। बच्चे माँ का आज्ञा पालन करते हैं आदि । इसी प्रकार पिता और गुरू का आज्ञा पालन करने के संबंध में और माता-पिता और गुरू से मिलने वाली सचरित्रवादी पाठ।	संबंधों की पहचान संबंधों में वर्तने वाली चरित्र रूपी पाठ जैसा- माता बच्चों को समय समय पर सेवा करती है । बच्चे माँ का आज्ञा पालन करते हैं आदि ।	मूल्य- धीरता वीरता उदारता	वस्तुओं की सामान्य पहचान ।	पाठ्य सामग्रियों की पहचान उसकी उपयोगिता का बोध धीरे धीरे पौधों की पहचान और उसका सामान्य उपयोग, इसी के साथ संख्या का विस्तार बोध जैसा वस्तुओं की संख्या घटाने बढ़ाने के क्रम में पाठ ।	

मूल्यांकन- पुस्तिका सामग्री, स्थान की सुरक्षा, और सदउपयोग आज्ञा पालन का मूल्यांकन ।

श्री भजनाश्रम,
श्री नर्मदाचल,
पोष्ट: अमरकंटक, जिला-शहडोल
मध्यप्रदेश.

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मानव संचेतना वादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

कक्षा-- 3

स्नेह, कृतज्ञता, विश्वास जैसा व्यवहारकारी वाक्य रचना जैसा- साथियों के साथ विश्वास निर्वाह, गुरू, माता पिता के साथ कृतज्ञता का निर्वाह भाई व बहन के साथ गौरव सम्मान का निर्वाह। संबंधों में वर्तनेवाली मूल्य और चरित्रकारी पाठ।	सम्बन्धों का सम्बोधन।	मूल्य- धीरता वीरता, उदारता,	वस्तुओं की सामान्य उपयोगिता का प्रबोधन, उपयोग क्रम का पहचान।	विद्यार्थियों के उपयोग में आने वाली व्यवहार में आने वाली जैसा- पुस्तिका आदि। पाठ्य-सामग्री, वस्त्र आवास, अलंकार और वाहन आदि।

मूल्यांकन- वस्तुएँ सामग्री, वस्त्र, अलंकार, क्रम का सदउपयोग सुरक्षा और आज्ञा पालन पूर्ण व्यवहार- का मूल्यांकन।

श्री भजनाश्रम-,
श्री नर्मदांचल
पोष्ट: अमरकंटक जिला-शहडोल
मध्यप्रदेश.

मानव संचेतनावादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

कक्षा: 4

संबंधों में वर्तने वाली व्यवहारवादी पाठ - जैसे समय के साथ कोई बीमार पड़ने पर स्कूल जाने के साथ किसी से मिलने के संबंध में, भोजन शयन आदि। मूल्य चरित्र और नैतिकता का अविभाज्यता उसका नित्य वर्तमान वादी पाठ जैसे - माँ विश्वासपूर्वक अधिकाधिक बच्चों को सेवा पोषण करने के रूप में चरित्र को और अधिकाधिक वस्तुओं को बच्चों के हित में सदुपयोग और उसकी रख रखाव के रूप में सुरक्षा और नैतिकता का इत्यादि।	सम्बन्धों में वर्तने वाली चरित्र और व्यवहारवादी पाठ कर्तव्यों का प्रबोधन।	मूल्य- धीरता वीरता उदारता	वस्तुओं की सामान्य उपयोगिता का परिचय आवश्यकता का प्रबोधन।	मनुष्येत्तर प्रकृति की पहचानने की क्षमता, प्रत्येक विद्यार्थी में होने की सत्यता का - पाठ जैसा जीव, जानवर, पौधे, वृक्ष, जल, वायु अग्नि आदि सभी प्रकृति का दृष्टा मनुष्य है।	

मूल्यांकन- शिक्षा सामग्री, अलंकार व कक्षा सामग्रियों की सुरक्षा सदुपयोग कार्यव्यवहार का मूल्यांकन।

श्री भजनाश्रम,
श्री नर्मदाचल
पोष्ट-अमरकंटक, जिला-शहडोल,

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मानव संचेतनावादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

कक्षा – 5

व्यवहार संचेतना का स्पष्ट रूप जैसे – माता-पिता, भाई-बहन पिता-पुत्र, गुरू-शिष्य और मित्र संबंधों में । वर्तमानकारी पाठ, वर्तमान के लिये प्रवर्तन । व्यवहार संचेतना की अनिवार्यता जैसा– सह अस्तित्व के लिये सहकारिता और सहभागियता की अपरिहार्यता कर्तव्य और दायित्व की पहचान जैसा उत्पादन कार्यों में कर्तव्य का व्यवहारकार्य सेवा में दायित्व की पहचान स्वीकृति के लिये प्रवर्तन उसकी वाहन करने की आवश्यकता उपयोगिता तथा प्रयोजनियतावादी पाठ ।	संबंधों में वर्तने वाली स्थापित मूल्य एवं शिष्ट मूल्यों का बोध परस्पर व्यवहार में वर्तने वाली चरित्र अर्थात मानव संचेतनावादी चरित्र का पाठ ।	मूल्य– वीरता, धीरता, उदारता.	वस्तुओं की आवश्यकता एवं उनकी उपयोगिता का बोध रासायनिक एवं भौतिक सीमा का ज्ञान ।	भौतिक और रासायनिक परिवर्तन प्राणावस्था से पदार्थावस्था, पदार्थावस्था से प्राणावस्था में परिवर्तनशील रासायनिक एवं भौतिक सीमावर्ती प्रकृति का बोध मानव उसका दृष्टा होने का ऐश्वर्य सम्पन्न ईकाई के रूप में प्रबोधन ।	

मूल्यांकन– शाला कक्षा, सामग्री, शिक्षा, अलंकार सामग्रियों की सुरक्षा व सदुपयोग शाला और शाला से बाहर विद्यार्थियों का चरित्र चित्रण का मूल्यांकन ।

श्री भजनाश्रम,
श्री नर्मदांचल
पोष्ट: अमरकंटक, जिला–शहडोल
मध्यप्रदेश.

मानव संचेतनावादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

कक्षा: 6

कर्तव्य और दायित्व को वहनकारी पाठ जैसा उत्पादन की आवश्यकता परस्पर सम्बन्धों में व्यवहार की अनिवार्यता । व्यवसाय और चरित्रकारी पाठ जैसा कृतज्ञता आदि स्थापित मूल्यों पूर्वक और शिष्ट मूल्यों सहित संबंधों के साथ वर्तने वाली पाठ चरित्र का आंकलन व्यवहार और व्यवसाय में प्रकाशित होने की तथ्यपूर्ण पाठ समाज के चारों आयाम जैसे – संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था का अविभाज्य वर्तमान का प्रबोधन	सम्बन्धों को वर्तने वाली शिष्टता का पाठ व्यवसाय मूल्य व्यवहार मूल्य में अर्पित समर्पित होने का पाठ ।	मूल्य– वीरता, धीरता, उदारता, व दया, नोट: 6वीं से दसवीं कक्षा तक अनुशासनपूर्वक पाठ पठन कार्य होगी ।	प्राण व निष्प्राण कोशिकाओं का स्पष्ट ज्ञान कोशिका परस्पर संगठित होने का गुण, उसी में अर्थात कोशिकाओं में समाहित रहने का स्पष्ट ज्ञान।	पदार्थावस्था में निष्प्राण कोशिकाओं के रूप में होने की तत्यता को स्पष्ट करना, पदार्थावस्था का तात्पर्य मृत, पाषाण, मणी, धातु और उसके संयुक्त विकारों से है । पदार्थावस्था विकसित होकर प्राणावस्था में होना और प्राणावस्था व्हास होकर पदार्थावस्था में होने की यथार्थता को स्पष्ट करने वाली पाठ उसकी साक्षी में वनस्पतियाँ व्हास होकर पदार्थो में अर्थात मिट्टी आदि में परिवर्तित होता हुआ दिखाने, प्रत्येक बीज इसी मिट्टी गोबर हवा, पानी और उजालों को पाकर अंकुरित पल्लवित एवं परिवर्तित होता हुआ दृष्टान्तवादी पाठ ।	

मूल्यांकन – शाला और शालेय सामग्री, परिवार और पारिवारिक कार्य व्यवहार सामग्रियों का सदुपयोग व सुरक्षा अनुशासन।

श्री भजनाश्रम,
श्री नर्मदांचल
पोष्ट: अमरकंटक जिला–शहडोल

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मानव संचेतनावादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

कक्षा- 8

मनवृत्ति, चित्त, बुद्धि और आत्मा जैसे अक्षयबल और आशा, विचार इच्छा, संकल्प और अनुभव जैसी अक्षय शक्तियाँ संयुक्त स्वरूप जीवन, जीवन शक्तियों का परावर्तन एवं प्रत्यावर्तन की विपुलता, आवश्यकता, उपयोगिता व प्रयोजनीयता का पाठ । देखना ही समझना, समझना ही देखना सिद्धान्त के आधार पर पहचान क्षमता और उसकी अक्षयता का पाठ । अक्षयबल और अक्षय शक्तियों का संयुक्त स्वरूप ही संचेतना होने का पाठ । संज्ञानशीलता और संवेदनशीलता का संयुक्त प्रभावशीलन ही जीवन का परावर्तन एवं प्रत्यावर्तन होने का पाठ । समाज के चारों आयाम और जीवन के चारों आयाम के संबंध में व्यावहारिक पाठ ।	जीवन की पहचान जीवन की जागृति की पहचान ।	मूल्य- धीरता वीरता उदारता दया ।	परमाणु में गठनपूर्ण होने की सत्यता का पाठ ।	मनुष्येत्तर प्रकृति के साथ संतुलित संबंध की पहचान व्यवसाय की अनिवार्यता, व्यवसाय पद में मनुष्य की विशेषता व्यवसाय- कर्ता दृष्टा और निर्माता मनुष्य ही होने की वैभव का पाठ, मनुष्य मनुष्येत्तर प्रकृति का ज्ञाता होने के मूल कारण में चैतन्य इकाई होने का पाठ । चैतन्य इकाई गठनपूर्णता से सम्पन्न एक परमाणु होने का पाठ, विचार शक्ति ही व्यवसाय पूर्वक मनुष्येत्तर प्रकृति में उपयोगिता मूल्य और कला मूल्य को (निपुणता और कुशलतापूर्वक) स्थापित करने की व्यवस्था का पाठ । उसकी अनिवार्यता का प्रबोधक ।

मूल्यांकन- गांव, मोहल्ला, शाला परिवार में किया गया व्यवहार और चरित्र का मूल्यांकन, शालेय एवं शाला परिसर
परिवारीय वस्तुओं का सदुपयोग व सुरक्षा का मूल्यांकन ।

श्री अंजनाश्रम,
श्री नर्मदाजल,
पोष्ट: अमरकंटक, जिला- शहडोल
मध्यप्रदेश.

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मानव संचेतनावादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

कक्षा: 9

चैतन्य शक्तियाँ अर्थात आशा, विचार इच्छा, संकल्प और अनुभूतियाँ शरीर के द्वारा प्रकाशित होने की व्यवस्था का पाठ जैसा चैतन्य शक्तियों का संकेत मेधस में होना, मेधस के द्वारा सम्पूर्ण शरीर का संचालित होना, फलतः कार्य व्यवहार सम्पादित होने का जो यथार्थ है उसे स्पष्ट करने का पाठ । अधिक गति और शक्ति, कम गति और शक्ति के माध्यम से प्रकाशित होने की व्यवस्था का पाठ । संचेतना का परिष्कृत क्रम में मानव संचेतना का स्वरूप और न्यायपूर्ण व्यवहार का आधार होने का पाठ समाज मूल्यों का निर्वाह ही न्यायिक होने का पाठ और न्यायिकता ही दायित्व होने का पाठ । जीवन का परिचय, जीवनमूल्य का परिचय, जीवन मूल्य के अर्थ में मानवमूल्य, मानव मूल्य के अर्थ में व्यवहार मूल्य, व्यवहार मूल्य के अर्थ में व्यवसाय मूल्य सार्थक होना ही सदुपयोग और सुरक्षा होने का तथ्यपूर्ण पाठ, तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग यही धर्मनीति समाजनीति होने की तथ्य का पाठ फलतः तन, मन, धनरूपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा ही नैतिकता होने की यह चरित्र और मूल्य से अविभाज्य होने की तथ्य का प्रबोधन	मनुष्य जड़ चैतन्यात्मक प्रकृति का संयुक्त साकाररूप में होने का पाठ न्यायपूर्ण जीवन कार्य व्यवहार विन्यास का प्रबोधन	मूल्य- धीरता वीरता उदारता दया ।		चैतन्य इकाई मूलत: एक परमाणु होने के कारण परमाणु प्रस्थापन, विस्थापन से मुक्ति ही गठन पूर्णता का अर्थ होने के कारण गठन पूर्ण इकाई में अक्षयता स्वयं सिद्ध हो जाता है ।	गठनपूर्ण परमाणु की (चैतन्य इकाई) रचना उसकी सीमा, उसकी पहचान उसकी अक्षयशीलता का पाठ । सम्पूर्ण रचनाएं यांत्रिक होने का तथ्य यांत्रिक अक्षयशील होने का तथ्य, सम्पूर्ण यांत्रिक क्रिया का दृष्टा, दृष्टा और कर्ता का स्वरूप मनुष्य होने की सत्य का प्रतिपादन मनुष्य संचेतनशील होने का तथ्य, वहाँ संचेतना पूर्वक ही उक्त सभी कार्य को सम्पादित करने का तथ्य अक्षय बल, अक्षयशक्तियों का संयुक्त रूपी संचेतना होने के कारण । संज्ञानशीलता व संवेदनशीलता का सिद्ध होने का पाठ, संचेतना के अभाव में दृष्टापन अर्थात अनुभव करने की क्षमता नहीं होती है । अनुभव ही प्रमाण परम होने की पाठ ।

मूल्यांकन:- तन, मन धन, रूपी अर्थ की सुरक्षा और सदुपयोग संबंधों में कृतकारित व अनुमोदित व्यवहार व्यवसाय के प्रति कर्तव्य की जागृति का मूल्यांकन

मानव संचेतनावादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

कक्षा: 10

	विवेक की परिभाषा और इसकी आवश्यकता एवं प्रयोजनियता का पाठ, पौद्धिक, नियम, सामाजिक नियम और प्राकृतिक नियम का पाठ, मूल प्रवृत्तियों के स्पष्ट स्वरूपों का प्रबोधन आवेशित गति और स्वभाव गति, का प्रबोधन, जीवन की अवरित क्रियाशीलता और उसके लक्ष्य का बोध जीवन शक्तियों का परावर्तन, प्रत्यावर्तन के फलस्वरूप जीवन कृति की नित्य अभीष्ट की पहचान। राष्ट्र चेतना और समाज संचेतना का अविभाज्य वर्तमान का पहचान, समाज का सार्वभौम अभिष्ट= जैसा समाधान, समृद्धि, अभय सह-अस्तित्व का पहचान।	जीवन की नित्यता और शरीर की नश्वरता का बोध व्यवहारिक जीवन के लिये आवश्यकीय नियमों का बोध।	मूल्य-धीरता वीरता उदारता दया।	विकास के क्रम में चारों अवस्था की पहचान चारों अवस्थाओं में विकास का क्रम संबंध।	विज्ञान की परिभाषा-समझकर ही आदमी देखता है, जैसा जिसको जो देखता है उसकी सम्पूर्णता उनके आँखों में नहीं आती, प्रत्येक इकाई में रूप, गुण, स्वभाव, धर्म, वर्तने का प्रबोधन।	

क्रमश:...2

मूल्यांकन: तन, मन, धनात्मक अर्थ का सद्उपयोग और सुरक्षा अनुशासन चरित्र संबंधी मूल्यांकन।

मानव संचेतनावादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

कक्षा - 10

जीवन तृप्ति का पहचान जैसा समाधान व प्रमाणिकता प्रमाण और प्रमाणिकता नित्य प्रबोधन उसकी निरन्तरता आवश्यकता, उपयोगिता और प्रयोजनियता का पाठ। समाज संचेतना के अर्थ में समाज संचेतना की पहचान जैसा व्यक्ति का परिचय, समाज राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय नित्य सामरस्यता का सूत्र प्रमाणिकता व समाधान होने का पाठ।				आँखों में केवल रूप उसमें भी दो आयाम-अर्थात रूप में आकार, आयतन, घन तीन आयाम- होती है। उसमें से आकार, आयतन ही आँखों में आती है। आकार, आयतन में ज्यादा से ज्यादा 180° देखने आता है का पाठ। देखने से अधिक संज्ञा प्रत्येक मनुष्य में होने का प्रबोधन। जो जितना जानता है वह उतना चाह नहीं पाता, जो जितना चाहता है वह उतना कर नहीं पाता जो जितना करता है वह उतना भोग नहीं पाता का पाठ। प्रत्येक रचना भौतिक और रासायनिक सीमा में सम्पन्न होने की पाठ इन सबका दृष्टा जीवन होने का पाठ।

मूल्यांकन: तन, मन धनात्मक अर्थ का सद्उपयोग और सुरक्षा अनुशासन चरित्र सम्बन्धी मूल्यांकन।

श्री भजनाश्रम, श्री नर्मदाजल
पोष्ट: अमरकंटक, जिला-शहडोल, मध्यप्रदेश.

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मानव संचेतनावादी शिक्षा संस्था का पाठ्यक्रम

कक्षा : 11

मानवीयता की सीमा में मनुष्य अपव्ययों से मुक्ति होने तन, मन, धनात्मक अर्थ का सद उपयोग व सुरक्षा करने योग्य है का पाठ । मानवीयता की सीमा में मनुष्य संयत होने के कारण आवश्यकताएँ सीमित होने की तत्यता का पाठ । मानवीयता की सीमा में मनुष्य की आवश्यकताएँ सीमित होने के कारण अधिक.उत्पादन कम उपभोग योग्य होने की व्यवस्था का पाठ प्रत्येक मनुष्य का अभीष्ट और लक्ष्य समान्वय और प्रमाणिकता होने की यथार्थ का पाठ ।	मानवीयता ही मानव का स्वत्व होने का प्रवोधन स्वत्व ही स्वतन्त्रता और अधिकार का आधार होने का प्रवोधन	मूल्य- धीरता वीरता उदारता दया कृपा, करूणा नोट: 11वीं से 14 कक्षा तक स्वानुशासन व्यवस्था रहेगी।	विकास के क्रम में गठन पूर्णता के अनन्तर जीवन में क्रिया पूर्णता और आचरण पूर्णता होने और उसकी निरन्तरता होने की सत्यता का प्रवोधन	कारण, गुण, गणित पूर्वक निर्णय पाने की व्यवस्था का पाठ, आँखों में जितना देखने को मिलता है, उससे अधिक समझ में आता है का पाठ । जो जैसा है उसे वैसा समझना ही स्पष्ट समझ अथवा सार्थक समझ होने का प्रवोधन । स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य का प्रवोधन फलत: अस्तित्व कैसा है का पाठ साथ ही कितना है की आवश्यकतानुरूप होने का पाठ । §1§ स्थिति सत्य: सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति ही अस्तित्व सर्वस्व होने का पाठ

मूल्यांकन:- व्यवहार में चरित्र अर्थात शिष्टता, व्यवसाय में कर्माभ्यासिता तथा स्वानुशासनपूर्वक किया गया तन, मन धनात्मक अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा का मूल्यांकन ।

... 2

मानव संचेतनावादी शिक्षा संस्था का पाठ्य क्रम

कक्षा : 11वीं

मनुष्य के चारों आयाम व्यवसाय व्यवहार, विचार और अनुभूति में सामरस्यता का आधार प्रमाणिकता व समाधान होने की व्यवस्था का पाठ । जीवन सामरस्यता पूर्ण मनुष्य ही पूर्णतया सामाजिक होने का पाठ । सामाजिकता मूल्य और मूल्यांकन न्याय सुलभ एवं विनिमय सुलभ होने की व्यवस्था का पाठ । न्याय सुलभता व विनिमय सुलभता पूर्वक ही समाज का चारों आयाम, संस्कृति सभ्यता विधि व व्यवस्था में परिपूर्ण सामरस्यता और उसकर निरन्तरता होने का पाठ				§2§ वस्तु स्थिति सत्य में देश काल दिशा । §3§ वस्तु स्थिति सत्य में रूप गुण स्वभाव धर्म का अध्ययन विज्ञान तकनीकी संबंध उत्पादन कुशलता का निपुणता का प्रवोधन और कर्माभ्यास ।

मूल्यांकन:- व्यवहार में चरित्र अर्थात शिष्टता, व्यवसाय में कर्माभ्यासता तथा स्वानुशासनपूर्वक किया गया तन, मन धनात्मक अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा का मूल्यांकन

स्वामी नागराज जी शर्मा
श्री नर्मदाजल, भजनाश्रम
अमरकंटक जिला शहडोल §म0प्र0§

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मानव संचेतनावादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

कक्षा: 12

गुणात्मक विकास अमानवीयता से मानवीयता से अतिमानवीयता की ओर । विकास के इतिहास में तीन चक्र जैसा प्राणपद, भ्रांतिपद और देव पद तथा दिव्यपद का प्रबोधन संचेतना ही परिष्कृत अपरिष्कृत और परिष्कृतपूर्ण स्तरों में प्रकाशित होने की सत्यता का पाठ । परिष्कृत चेतना ही मानव संचेतना होने मानव संचेतना ही संज्ञानशीलता और संवेदनशीलता का संतुलित होने का पाठ । संचेतना ही जागृत अर्द्धजागृत, अल्पजागृत प्रभेदों में प्रकाशित होने की व्यवस्था का पाठ ।	जीवन संचेतना का स्तरों का स्वरूप गुणात्मक परिवर्तन के क्रम में क्रिया व आचरण पूर्णता का प्रबोधन	मूल्य:- 1. धीरता 2. वीरता 3. उदारता 4. दया 5. कृपा 6. करूणा	सामान्य आकांक्षा व महत्वकांक्षा की सीमा में वस्तुओं के निर्माण करने की आवश्यकता उसकी उपयोगिता व प्रयोजनियता का प्रबोधन	उपयोगिता मूल्य व सुन्दरता मूल्य उपयोगिता आहार, आवास अलंकार, दूरश्रवण, दूर गमन, दूर दर्शन के प्रयोजन होने का पाठ

मूल्यांकन :- स्वानुशासन व उत्पादन क्षमता का मूल्यांकन

.....2

:: 2 ::

मानव संचेतनावादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

कक्षा : 12

जीवन जागृति ही जीवन का परम-लक्ष्य होने का पाठ । जीवन जागृति आचरण पूर्णता और जागृति क्रम में ही क्रिया पूर्णता की व्यवस्था का पाठ । मानव संचेतना पूर्वक ही सहअस्तित्व होने का पाठ फलतः तन, मन, धनात्मक अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा सम्पन्न होने का पाठ । जीवन जागृति ही स्वानुशासन का जागृति की अपेक्षा ही अनुशासन का और जागृति का भास ही आज्ञापालन का आधार होने का पाठ ।				उपयोगी वस्तुओं के निर्माण में विज्ञान और तकनीकी पूर्वक प्रबोधन और कुशलता निपुणता पूर्वक कर्माभ्यास ।

मूल्यांकन:- स्वानुशासन व उत्पादन क्षमता का मूल्यांकन

स्वामी नागराज जी शर्मा
श्री नर्मदा जल अंजना श्रम
अमरकंटक, जिला शहडोल म0प्र0

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मानव संचेतना वादी संस्कार का पाठ्यक्रम

कक्षा : 13

सत्ता में संपृक्त प्रकृति अस्तित्व सर्वस्व अस्तित्व न घटती न बढ़ती अरूपात्मक अस्तित्व में ही सम्पूर्ण रूपात्मक अस्तित्व ही क्रियाशील है। सम्पूर्ण ईकाईयों की परस्परता में अरूपात्मक अस्तित्व दिखाई पड़ती है। मूल्य स्वयं में जैसा विश्वास स्वयं में जैसा अरूपात्मक अस्तित्व है। विश्वासपूर्वक ही परस्पर मनुष्य सहअस्तीत्वशील है। मनुष्य ही मनुष्य का विकास और ह्रास का प्रधान कारण है, जड़ चैतन्यात्मक प्रकृति सत्ता में नियंत्रित है सत्ता ही व्यवसाय काल में नियम, व्यवहारकाल में न्याय विचार काल में समाधान अनुभवकाल में सत्य के नाम से जाना जाता है। का प्रबोधन का पाठ। शिक्षा प्रदान करने के लिये योग्यतानुसार उचित कक्षाओं में अवसर प्रदान करने की व्यवस्था का पाठ और अभ्यास	तत्व सत्ता में संपृक्त प्रकृति में गर्भित होने फलत: तत्व में अनुभूत होने पर्यन्त विकास के लिये वाध्य होने का पाठ	मूल्य:- 1. धीरता 2. वीरता 3. उदारता 4. दया 5. कृपा 6. करूणा	मध्यस्थ क्रिया और मध्यस्थ शक्ति का प्रबोधन	प्रत्येक परमाणु के मध्य में स्थित और मध्यस्थ क्रिया होने का पाठ। मध्यस्थ क्रिया में ही मध्यस्थता शक्ति का नित्य प्रसारण होने का पाठ। प्रत्येक ईकाई सत्ता में संपृक्त होने के कारण उर्जामय फलत: आकर्षण विकर्षण वादी गति कार्य विन्यास प्रबोधन। आकर्षणवादी कार्य विन्यास ही अंशों को परमाणु में गठित होने, परमाणुएं, अणुएं कण और कई कण का संयुक्त स्वरूप, संगठित पदार्थ पिण्ड के रूप में होने का पाठ, चाहे प्राण कोशिकाएं हों या निष्प्राण कोशिकाएं। यह सभी रासायनिक भौतिक सीमा न होने और जड़ चैतन्य का संयुक्त आकार मनुष्य इन सबका दृष्टा होने का पाठ तथा सम्पूर्ण माप दण्ड का निर्माता मनुष्य होने का पाठ। उत्पादन क्रम विज्ञान व तकनीकी पूर्वक कुशलता निपुणतावादी पद्धति से कर्माभ्यास

- स्वावलम्बन तथा उत्पादन क्षमता का मूल्यांकन व शिक्षित करने का पाठ।

स्वामी नागराज जी शर्मा
श्री नर्मदांचल भजनाश्रम
अमरकंटक जिला शहडोल म०प्र०

मानव संचेतनावादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

कक्षा : 14

मध्यस्थ क्रिया, मध्यस्थ शक्ति के आधार पर सम-विषम का संतुलित होने का पाठ प्रत्येक आवेश सामान्य होने की साधियों का पाठ। 'काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद मात्सर्य होने का पाठ। आवेशित गतियां, मूल प्रवृत्तियां न होने मूल प्रवृत्तियां जीवन का ऐश्वर्य होने का पाठ। मनुष्य में मूल प्रवृत्तियां अत्याग्रह, स्नेह, विद्या सरलता और अभय विश्वास का पाठ परिष्कृत जीवन संचेतना में इन सभी मूल प्रवृत्तियों वर्तमान होने का पाठ। विकास, विकास का इतिहास जीवन घटना जीवन, जीवनी क्रम में जीवन जागृति जीवन का कार्यक्रम ही सामाजिक कार्यक्रम, सामाजिक कार्यक्रम ही जीवन का कार्यक्रम होने का पाठ। प्रमाण ही पाठ, पाठ ही प्रबोधन की वस्तु, प्रबोधन ही समाधान के रूप में बोध होने का पाठ	समाधानात्मक भौतिकवाद व्यवहारात्मक जनवाद, अनुभवात्मक अध्यात्मवाद का पाठ	मूल्य:- 1. धीरता 2. वीरता 3. उदारता 4. कृपा 5. करूणा 6.	अस्तित्व की स्थिरता विकास की निश्चयता का पाठ।	सत्ता में संपृक्त प्रकृति ही अस्तित्व सर्वस्व। अस्तित्व कैसा है ? सिद्ध हो जाता है। और अस्तित्व कितना है कि आवश्यकता सिद्ध नहीं होती। आवश्यकता उपयोगिता और प्रयोजनियता के अर्थ में ही पहचान होती है। सत्ता अरूपात्मकअस्तित्व, संपृक्त प्रकृति रूपात्मक अस्तित्व प्रकृति अनन्त ईकाईयों का समूह है। किसी भी एक ईकाई का नाश नहीं होता। सत्ता में संपृक्त प्रकृति नित्य साम्य रस है। सत्ता में संपृक्त प्रकृति सत्ता में अनुभव पर्यन्त विकास के लिये वाध्य है। विकास स्वयं में क्रम है। क्रम स्वयं में नियति है। नियति स्वयं व्यवस्था है। सत्ता में संपूर्ण प्रकृति नियंत्रित है। नियम ही न्याय, न्याय ही धर्म, धर्म ही सत्य, सत्य ही ईश्वर, ईश्वर ही आनन्द है। आनन्द ही जीवन है। जीवन ही नियम है।

:- सानुताजन उत्पादन क्षमता और शिक्षा प्रदान करने की अर्थात आज्ञा पालन करने की क्षमता का मूल्यांकन।

स्वामी नागराज जी शर्मा, श्री नर्मदाजल, भजनाश्रम अमरकंटक जिला: शहडोल म०प्र०।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Newly Typed Set/80 (5)

मानव संचेतना वादी शिक्षा संस्कार का पाठ्यक्रम

मूल्यांकन : चेतना विकास व मूल्य शिक्षा सबंधित वस्तु मानवीय आचरण
कक्षा – 1

शिक्षा पाठ	शिक्षा वस्तु	शिक्षा नीति	शिक्षा वस्तु	शिक्षा पाठ
शरीर,अवयव, मानवीय, गुण, स्वभाव सम्बन्ध, कर्तव्य, दयित्व, आवश्यकता, उपयोगिता एवं प्रयोजन नियतिवादी शब्दों के साथ जैसे – अभय करूणा आदि। अधिकाधिक सम्बन्धों में वर्तने वाले शब्दों की सूचना जैसे – अभय, रहना, आदर करना, इंगित करना, उदय होना, इतिहास बनाना।	अक्षर बोध	कक्षा 1 से 5 तक आज्ञा पालन पद्धति रहेगी। मूल्य– 1) धीरता 2) वीरता 3) उदारता	संख्या बोध	शरीर इन्द्रिय सम्बन्ध सहित संख्या बोध कराना जैसे – पांच उंगली, पांच इन्द्रिय आदि तीन मानवीय मूल्यों आदि के द्वारा ।

मूल्यांकन : पुस्तक ही को सुरक्षा व सदुपयोग का किया गया प्रबोधन उसका आज्ञा पालन का मूल्यांकन।
कक्षा – 2

सम्बन्धो में वर्तने वाली चरित्र रूपी पाठ जैसे माता बच्चों को समय समय पर प्यार से सेवा करती है। बच्चे मां का आज्ञा पालन करते है आदि। इसी प्रकार पिता और गुरु का आज्ञा पालन करने के सम्बन्ध में और माता– पिता और गुरु का आज्ञा पालन करने के सम्बन्ध में और माता–पिता और गुरु से मिलन वाली सचरित्रवादी पाठ।	सम्बन्धों की पहचान, सम्बन्धों में वर्तने वाली चरित्र रूपी पाठ जैसे – माता बच्चों को समय–समय पर सेवा करनी	मूल्य – धीरता वीरता उदारता	वस्तुओं का सामान्य पहचान	पाठ्य सामग्रियों की पहचान, उसकी उपयोगिता का बोध, धीरे– धीरे पौधों की पहचान और उसका सामन्य उपयोग, इसी के साथ संख्या का विस्तार बोध जैसे वस्तुओं की संख्या घटाने– बढ़ाने के क्रम में पाठ

के हित में सदुपयोग और उसकी रख– रखाव के रूप में सुरक्षा और नैतिकता का इत्यादि।

मूल्यांकन : शिक्षा सामग्री, अलंकार व कक्षा सामग्रियों की सुरक्षा सदुपयोग कार्य– व्यवहार का मूल्यांकन –
कक्षा 5

व्यवहार संचेतना का स्पष्ट रूप जैसे माता– पिता, भाई– बहन, पिता–पुत्र, गुरू–शिष्य और मित्र सम्बन्धों में। वर्तमानकारी पाठ, वर्तमान के लिये प्रवर्तन। व्यवहार, संवेतना की अनिवार्यता जैसे – सह–अस्तित्व के लिए सहकरिता और सहभागिता की अपरिहार्यता कर्तव्य और दायित्व की पहचान जैसा उत्पादन कार्यो मे कर्तव्य का व्यवहार कार्य सेवा में दायित्व की पहचान स्वीकृति के लिये प्रवर्तन उसकी वाहन करने की आवश्यकता उपयोगिता तथा प्रयोजनीयतावादी पाठ।	सम्बन्धों में वर्तने वाले स्थापित मूल्य एवं शिष्ट मूल्यों का बोध परस्पर व्यवहार में वर्तने वाली चरित्र अर्थात मानव संचेतना वादी चरित्र का पाठ।	मूल्य वीरता, धीरता, उदारता	वस्तुओ की आवश्यकता एवं उनकी उपयोगिता का बोध रासायनिक एवं भौतिक सीमा का ज्ञान।	भौतिक और रासायनिक परिवर्तन प्राणावस्था से पदार्थावस्था, पदार्थावस्था से प्राणावस्था में परिवर्तनशील, रासायनिक एवं भौतिक सीमावर्ती प्रकृति का बोध मानव उसका द्रष्टा होने का ऐश्वर्य सम्पन्न इकाई के रूप में प्रबोधन।

मूल्यांकन : शाला कक्षा, सामग्री, शिक्षा, अलंकार सामग्रियों की सुरक्षा व सदुपयोग शाला और शाला से बाहर विद्यार्थियों का चरित्र चित्रण का मूल्यांकन।
कक्षा 6

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

	हैं। बच्चे मां का आज्ञा पालन करते है आदि।			

मूल्यांकन : पुस्तिका सामग्री, स्थान की सुरक्षा, और सदुपयोग आज्ञा पालन का मूल्यांकन।

कक्षा – 3

स्नेह, कृतज्ञता, विश्वास जैसा व्यवहारकारी वाक्य रचना जैसे – साथियों के साथ विश्वास, निर्वाह, गुरू, माता, पिता के साथ सम्बोधन कृतज्ञता का निर्वाह– भाई व बहन के साथ गौरव सम्मान का निर्वाह। सम्बन्धों में वर्तने वाली मूल्य और चरित्रकारी पाठ।	सम्बन्धों का सम्बोधन	मूल्य – धीरता, वीरता, उदारता	वस्तुओं की सामान्य उपयोगिता का प्रबोधन, उपयोग कम का पहचान।	विद्यार्थियों के उपयोग में आने वाली व्यवहार में आने वाली जैसा– पुस्तिका आदि। पाठ्य सामग्री, वस्त्र, आवास, अलंकार और वाहन आदि।

मूल्यांकन वस्तएं सामग्री, वस्त्र, अलंकार, कम का सदुपयोग सुरक्षा और आज्ञा पालन पूर्ण व्यवहार का मूल्यांकन।

कक्षा 4

सम्बन्धों में वर्तने वाली व्यवहारवादी पाठ – जैसे समय के साथ कोई बीमार पड़ने पर स्कूल जाने के साथ किसी से मिलने के सम्बन्ध में भोजन, शयन के सम्बन्ध में पाठ आदि। मूल्य चरित्र और नैतिकता का अविभाज्यता, उसका नित्य वर्तमानवादी पाठ जैसे – मां विश्वासपूर्वक अधिकाधिक बच्चों को संरक्षण पोषण करने के रूप में चरित्र को और अधिकाधिक वस्तुओ को बच्चों	सम्बन्धों में वर्तने वाली चरित्र और व्यवहारवादी पाठ, कर्तव्यों का प्रबोधन	मूल्य– धीरता, वीरता, उदारता	वस्तुओ की सामान्य उपयोगिता का परिचय आवश्यकता का प्रबोधन	मनुष्येत्तर प्रकृति की पहचानने की क्षमता, प्रत्येक विद्यार्थी में होने की सत्यताओं का पाठ जैसा जीव जानवर, पौधे, वृक्ष, जलवायु, अग्नि, आदि सभी प्रकृति का द्रष्टा मनुष्य है।

कर्तव्य और दायित्व को वहनकारी पाठ जैसा उत्पादन की आवश्यकता, परस्पर सम्बन्धों में व्यवहार की अनिवार्यता। व्यवसाय और चरित्रकारी पाठ जैसा कृतज्ञता आदि स्थापित मूल्यों पूर्वक और शिष्ट मूल्यों सहित सम्बन्धों के साथ वर्तने वाली पाठ चरित्र का आंकलन व्यवहार और व्यवसाय में प्रकाशित होने की तथ्यपूर्ण पाठ समाज के चारो आयाम जैसे– संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था का अविभाज्य वर्तमान का प्रबोधन।	सम्बन्धों को वर्तने वाली शिष्टता का पाठ व्यवसाय मूल्य में अर्पित, समर्पित होने का पाठ।	मूल्य– वीरता, धीरता, उदारता व दया नोट – 6 वीं से 10 वीं कक्षा तक अनुशासनपूर्वक पाठ, पठन कार्य होगी।	प्राण व निश्प्राण कोशिकाओं का स्पष्ट ज्ञान कोशिका परस्पर संगठित होने का गुण, उसी में अर्थात् कोशिकाओं में समाहित रहने का स्पष्ट ज्ञान	पदार्थावस्था में निष्प्राण कोशिकाओं के रूप में होने की सत्यता को स्पष्ट करना, पदार्थावस्था का तात्पर्य मृत, पाषाण, मणी,धातु और उसके समस्त विकारों से हैं। पदार्थावस्था विकसित होकर प्राणावस्था में होना और प्राणावस्था ह्रास होकर पदार्थावस्था में होने की यर्थाथता को स्पष्ट करने वाली पाठ। उसकी साक्षी में वनस्पतियां ह्रास होकर पदार्थो में अर्थात् मिट्टी आदि में परिवर्तित होता हुआ दिखाने, प्रत्येक बीज इसी मिट्टी, गोबर, हवा, पानी और उजालों को पाकर अंकुरित, पल्लवित एवं परिवर्तित होता हुआ दृष्टान्तवादी पाठ।

मूल्यांकन – शाला और शतंय सामग्री, परिवार और पारिवारिक और पारिवारिक कार्य – व्यवहार सामग्रियां का सदुपयोग व सुरक्षा अनुशासन।

कक्षा – 7

धीरता, वीरता, उदारता और दया की पहचान जैसा प्रत्येक व्यवसाय व व्यवहार कार्य और सेवा की दृढ़ता के रूप में धीरता को। ऐसी दृढ़ता से विचलित व्यक्ति को दृढ़ता प्रदान करने के रूप में वीरता को, स्वयं की सुविधाओं को आवश्यकतानुसार दूसरों को प्रदान कर प्रसन्न होने के स्वरूप में उदारता को प्रवर्तित करने वाली पाठ और प्रवर्तन जीवन शक्तिओं का सामान्य परिचय जैसे मन में होने वाले आशा, वृत्ति में होने वाली तुलन, चित्त में होने वाली चित्रण, बुद्धि में होने–	मानव मूल्य का परावर्तन ही स्थापित मूल्य और शिष्ट मूल्य में परावार्तित होने का प्रबोधन	मूल्य – वीरता, धीरता, उदारता दया।	परमाणु की पहचान गठनपूर्वक परमाणु होने ही पहचान एक से अधिक परमाणुओं से रचना अणु अणुओं से रचित पदार्थ पिण्ड की	परमाणु मे विकास होने ही सत्यता का पाठ प्रत्येक परमाणु गठनपूर्वक परमाणु में एक से अधिक अंशों का गठन होने की सत्यता का स्पष्ट स्वरूप, प्रत्येक परमाणु में मध्यांश और उसके आश्रित अंश होने की सत्यता का पाठ। जो जिससे बना रहता है अर्थात् रचनाएँ होती हैं, वह उससे अधिक नहीं होती है। इस सिद्धान्त पर प्राण कोशिकाएं और निष्प्राण कोशिकाओं की रचना का पाठ प्रबोधन और कर्माभ्यास विचार शक्तियों का

वाली संकल्प और आत्मा में होने वाली अनुभूति।			पहचान।	परावर्तन में व्यवसाय अर्थात् उपयोगिता एवं कला मूल्यों को स्थापित करने का पाठ।

मूल्यांकन – शाला और शालेय समग्रियों का सदुपयोग व सुरक्षा परिवार, सम्पर्क एवं गुरुजनों के साथ किये गये व्यवहार का मूल्यांकन।

कक्षा – 8

मनवृति, चित्त, बुद्धि और आत्मा जैसे अक्षयबल और आशा, विचार इच्छा, संकल्प और अनुभव प्रमाण जैसी अक्षय शक्तियां संयुक्त स्वरूप जीवन शक्तियों का परावर्तन एवं प्रत्यावर्तन की विशालता, आवश्यकता, उपयोगिता व प्रयोजनीयंता का पाठ। देखना ही समझना, समझना ही देखना, सिद्धान्त के आधार पर पहचान क्षमता और उसकी अक्षयता का पाठ। अक्षयबल और अक्षय शक्तियों का संयुक्त स्वरूप ही संचेतना होने का पाठ। संज्ञानशीलता और संवेदनशीलता का संयुक्त प्रभावशीलन ही जीवन का परावर्तन एवं प्रत्यावर्तन होने का पाठ। समाज के चारों आयाम और जीवन के चारों आयाम के सम्बन्ध में व्यावहारिक पांठ।	जीवन की पहचान जीवन की जागृति की पहचान	मूल्य– धीरता, वीरता, उदारता, दया।	परमाणु में गठनपूर्ण होने ही सत्यता का पाठ	मनुष्येत्तर प्रकृति के साथ संतुलित सम्बन्ध की पहचान, व्यवसाय ही अनिवार्यता व्यवसाय पद में मनुष्य ही विशेषता व्यवसायकर्ता द्रष्टा और निर्माता मनुष्य ही होने ही वैभव का पाठ, मनुष्य मनुष्येत्तर प्रकृति का ज्ञाता होने के मूल कारण में चैतन्य इकाई होने का पाठ। चैतन्य इकाई गठनपूर्णता से सम्पन्न एक परमाणु होने की पाठ, विचार शक्ति ही व्यवसाय पूर्वक मनुष्येत्तर प्रकृति में उपयोगिता मूल्य और कला मूल्य को (निपुणता और कुशलतापूर्वक) स्थापित करने की व्यवस्था का पाठ। उसकी अनिवार्यता का प्रबोधन।

मूल्यांकन – गांव, मोहल्ला, शाला परिवार में किया गया व्यवहार और चरित्र का मूल्यांकन, शालेय एवं शाला परिसर पारिवारिक वस्तुओं का सदुपयोग व सुरक्षा का मूल्यांकन।

कक्षा – 9

विवेक की परिभाषा और इसकी आवश्यकता एवं प्रयोजनीयता का पाठ, बौद्धिक, नियम, सामाजिक नियम और प्राकृतिक नियम का पाठ, मूल प्रवृत्तियां के स्पष्ट स्वरूपों का प्रबोधन आवेशित गति और स्वभाव गति का प्रबोधन, जीवन की अविरत कियाशीलता और उसका लक्ष्य का बोध शक्तियों का परावर्तन, प्रत्यावर्तन के फलस्रूप जीवन कृति की नित्य अभीष्ट की पहचान, राष्ट्र चेतना और समाज संचेतना का अविभाज्य वर्तमान का पहचान समाज का सार्वभौम अभीष्ट जैसा समाधान, समृद्धि, अभय सह– अस्तित्व का पहचान।	जीवन की नित्यता और शरीर की नश्वरता का बोध व्यवहारिक जीवन के लिये आवश्यकीय नियमों का बोध।	मूल्य– धीरता, वीरता,उदारता, दया।	विकास के कम में चारों अवस्थाओं की पहचान चारों अवस्थाओं में विकास का कम सम्बन्ध	विज्ञान की परिभाषा सनझकर ही आदमी देखता है, जैसा जिसको जो देखता है उसकी सम्पूर्णता उनके आंखों में नहीं आती, प्रत्येक ईकाई में रूप, गुण, स्वभाव, धर्म, वर्तने का प्रबोधन

मूल्यांकन – तन, मन, धनात्मक अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा अनुशासन चरित्र सम्बन्धी मूल्यांकन।

कक्षा 10

जीवन तृप्ति का पहचान जैसा समाधान व प्रमाण और प्रमाणिकता नित्य प्रबोधन उसकी निरन्तरता आवश्यकता, उपयोगिता और प्रयोजनीयता का पाठ। समाज संचेतना के अर्थ में समाज संचेतना की पहचान जैसा व्यक्ति का परिचय समाज, राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय नित्य सामरस्यता का सूत्र प्रामाणिकता व समाधान होने का पाठ। अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था की सूत्र,				1) आंखों में केवल रूप उसमें भी दो आयाम अर्थात रूप में आकार, आयतन, धन तीन आयाम होती है। उसमें से आकार, आयतन ही आंखों में आती है। आकार, आयतन मे ज्यादा से ज्यादा 180° देखने में आता है, का पाठ। देखने से अधिक समझ प्रत्येक मनुष्य में होने का प्रबोधन। जो जितना जानता है वह उतना चाह नहीं पाता, जो जितना चाहता है वह उतना कर

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

चैतन्य शक्तियां अर्थात आशा, विचार इच्छा, संकल्प और अनुभूतियों, शरीर के द्वारा प्रकाशित होने ही व्यवस्था का पाठ जैसा, चैतन्य शक्तियों का संकेत मेधस में होना, मेधस के द्वारा सम्पूर्ण शरीर का संचालित होना, फालत : कार्य व्यवहार सम्पादित होने का जो यथार्थ है उसे स्पष्ट करने का पाठ। अधिक गति और शक्ति, कम गति और शक्ति के माध्यम से प्रकाशित होने की व्यवस्था का पाठ। संचेतन का परिष्कृत कम में मानव संचेतना का स्वरूप और न्यायपूर्ण व्यवहार का आधार होने का पाठ समाज मूल्यों का निर्वाह ही न्यायिक होने का पाठ और न्यायिकता ही दायित्व होने का पाठ। जीवन का परिचय, जीवन मूल्य का परिचय जीवन मूल्य के अर्थ में मानवमूल्य, मानव मूल्य के अर्थ में व्यवहार मूल्य, व्यवहार मूल्य के अर्थ में व्यवसाय मूल्य सार्थक होना ही सदुपयोग और सुरक्षा होने का तथ्यपूर्ण पाठ, तन–मन–धन रूपी अर्थ का सदुपयोग यही धर्मनीति समाजनीति होने की तथ्य का पाठ फलतः तन–मन–धन रूपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा ही नैतिकता होने ही यह चरित्र और मूल्य से अविभाज्य होने की तथ्य का प्रबोधन।	मनुष्य जड़ चैतन्यात्मक प्रकृति का संयुक्त साकार रूप में होने का पाठ न्यायपूर्ण जीवन कार्य व्यवहार विन्यास का प्रबोधन	मूल्य– धीरता, वीरता, उदारता, दया।	चैतन्य ईकाई मूलत : एक परमाणु होने के कारण परमाणु सीपन विस्थापन से मुक्ति ही गठन पूर्णता का अर्थ होने के कारण गठन पूर्ण इकाई में अक्षुण्णता स्वयं सिद्ध हो जाते है।	गठनपूर्ण परमाणु की (चैतन्य ईकाई रचना उसकी सीमा, उसकी पहचान उसकी अक्षयशीलता का पाठ। संपूर्ण रचनाएं यांत्रिक होने का तथ्य यांत्रिक अक्षयशील होने का तथ्य, संपूर्ण यांत्रिक किया का द्रष्टा, सृष्टा और कर्ता का स्वरूप मनुष्य होने ही सत्य का प्रतिपादन, मनुष्य संचेतनशील होने का तथ्य, वह संचेतनापूर्वक ही उक्त सभी कार्य को सम्पादित करने का तथ्य, अक्षय बल, अक्षयशक्तियों का संयुक्त रूपी संचेतना होने के कारण। संज्ञानशीलता व संवेदनशीलता का सिद्ध होने का पाठ, संचेतना के अभाव में द्रष्टापन अर्थात् अनुभव करने की क्षमता नहीं होती है। अनुभव ही प्रमाण परम होने का पाठ।

मूल्यांकन – तन, मन, धन रूपी अर्थ की सुरक्षा और सदुपयोग सम्बन्धो में कृत, कारिक व अनुमोदित व्यवहार व्यवसाय के प्रति कर्तव्य की जागृति मूल्यांकन

कक्षा – 10

व्याख्या। परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था– 5 आयाम, दस सोपान। मनुष्य का चारों आयाम व्यवसाय, व्यवहार, विचार और अनुभूति में सामरस्यता का आधार प्रामाणिकता व समाधान होने की व्यवस्था का पाठ। जीवन समरस्यता पूर्ण मनुष्य ही पूर्ण तथा सामाजिक होने का पाठ। सामाजिकता मूल्य और मूल्यांकन न्याय सुलभ एवं विनियम सुलभ होने की व्यवस्था का पाठ। न्याय सुलभता व विनिमय सुलभतापूर्वक ही समाज का चारों आयाम, संस्कृति सभ्यता विधि व व्यवस्था में परिपूर्ण और उसका निरन्तरता होने का पाठ।	नहीं पाता, जो जितना करता है, वह उतना भोग नहीं पाता का पाठ प्रत्येक रचना भौतिक और रासायनिक सीमा में सम्पन्न होने की पाठ इन सबका द्रष्टा जीवन होने का पाठ। 2) वस्तु स्थिति सत्य में देश काल दिशा। 3) वस्तु गत सत्य में रूप गुण स्वभाव धर्म का अध्ययन। 4) विज्ञान तकनीकी सम्बन्धी उत्पादन कुशलता व निपुणता का प्रबोधन और कर्माभ्यास।

मूल्यांकन – व्यवहार में चरित्र अर्थात् शिष्टता, व्यवसाय में कर्मण्यता तथा स्वानुशासनपूर्वक किया गया तन,मन, धनात्मक अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा का मूल्यांकन।

कक्षा 11

मानवीयता की सीमा में मनुष्य अपव्ययों से मुक्ति होने तन, मन, धनात्मक अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा करने योग्य है का पाठ। मानवीयता की सीमा मे मनुष्य संयत होने के कारण आवश्यकताए सीमित होने की सत्यता का पाठ। मानवीयता की सीमा में मनुष्य की आवश्यकताएं सीमित होने के कारण अधिक उत्पादन कम उपयोग योग्य होने की व्यवस्था का पाठ प्रत्येक मनुष्य का अभीष्ट और लक्ष्य समन्वय और प्रामाणिकता होने की यथार्थ का पाठ।	मनवीयता ही मानव का स्वत्व होने का प्रबोधन स्वत्व ही स्वतंत्रता और अधिकार का आधार होने का प्रबोधन रहेगी।	मूल्य – धीरता, वीरता, उदारता दया, कृपा, करूणा नोट – 11 वीं से 14 वीं कक्षा तक स्वानुशासन व्यवस्था	विकास के कम में किया पूर्णता और आचरण पूर्णता होने और उसकी निरन्तरता होने की सत्यता का प्रबोधन	कारण, गुण, गणित पूर्णक निर्णय पाने की व्यवस्था का पाठ, आंखो में जितना देखने की मिलता है उससे अधिक समझ में आता है, का पाठ। जो जैसा है उसे वैसा समझना ही स्पष्ट समझ अथवा सार्थक समझ होने का प्रबोधन। स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य का प्रबोधन फलनः अस्तित्व कैसा है, का पाठ साथ ही कितना है की आवश्यकतानुरूप होने का पाठ। 1) स्थिति—सत्य—सत्ता—में—सम्पृक्त

प्रकृति ही अस्तित्व सर्वस्व होने का पाठ।

मूल्यांकन – व्यवहार में चरित्राभ्यास,, व्यवसाय में कर्माभ्यासिता तथा स्वानुशासनपूर्वक किया गया तन, मन, धनात्मक अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा का मूल्यांकन।

कक्षा 12

गुणात्मक विकास अमानवीयता से मानवीयता से अतिमानवीयता की ओर। विकास के इतिहास में तीन व चार पद जैसा प्राणपद, स्तरों में प्रकाशित होने की सत्यता का पाठ। परिष्कृत चेतना ही मानव संचेतना होने, मानव संचेतना ही सज्ञानशीलता और संवेदनशीलता का संतुलित होने का पाठ। संचेतना ही जागृत, अर्द्धजागृत, अल्पजागृत प्रभेदों में प्रकाशित होने की व्यवस्था का पाठ।	**जीवन संचेतना का स्तरों का समरूप गुणात्मक परिवर्तन के कम में किया व आचरण पूर्णता का प्रबोधन**	मूल्य – 1–धीरता 2–वीरता 3–उदारता 4–दया, 5–कृपा, 6– करूणा	सामान्य आकांक्षा व महत्वाकांक्षा की सीमा में वस्तुओं के निर्माण करने की आवश्यकता उसकी उपयोगिता व प्रयोजनीयता का प्रबोधन।	उपयोगिता मूल्य व सुन्दरता मूल्य उपयोगिता आहार, आवास, अलंकार, दूरश्रवण, दूरगमन, दूरदर्शन के प्रयोजन होने का पाठ।

मूल्यांकन – शासन व उत्पादन क्षमता का मूल्यांकन।

कक्षा 12

जीवन जागृति ही जीवन का परम लक्ष्य होने का पाठ। जीवन जागृति आचरण पूर्णता और जागृति कम में ही किया पूर्णता को व्यवस्था का पाठ। मानव संचेतना पूर्वक ही सह– अस्तित्व होने का पाठ। फलत– तन, मन, धनात्मक अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा सम्पन्न होने का पाठ।	उपयोगी वस्तुओं के निर्माण में विज्ञान और तकनीकी पूर्वक प्रबोधन और कुशलता निपुणता पूर्वक कर्माभ्यास।

मूल्यांकन – स्वानुशासन तथा उत्पादन क्षमता का मूल्यांकन व शिक्षित करने का पाठ।

कक्षा 14

मध्यस्थ किया मध्यस्थ शक्ति के आधार पर सम विषम का संतुलित होने का पाठ। प्रत्येक आवेश सामान्य होने की साथियों का पाठ। काम, कोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य आवेशित गतियां मूल प्रवृत्तियां न होने का पाठ मूल प्रवृत्तियां जीवन का ऐश्वर्य होने का पाठ। मनुष्य में मूल प्रवृत्तियां असंग्रह, स्नेह, विद्या, सरलता और अभय (विश्वास) का पाठ परिष्कृत जीवन संचेतना मे इन सभी मूल प्रवृत्तियां वर्तमान होने का पाठ। विकास, विकास का इतिहास जीवन घटना, जीवन, जीवनी कम में जीवन जागृति का कार्यकम ही जीवन का कार्यकम होने का पाठ। प्रमाण ही पाठ, पाठ ही प्रबोधन की वस्तु प्रबोधन ही समाधान के रूप मे बोध होने का पाठ।	**समाधनात्मक भौतिकवाद व व्यवहारात्मक जनवाद, अनुभवात्मक, अध्यात्मवाद का पाठ।**	**मूल्य – 1–धीरता 2–वीरता 3–उदारता 4–दया 5–कृपा, 6– करूणा**	अस्तित्व की स्थिरता विकास व जागृति की निश्चयता का पाठ।	सत्ता में संपृक्त प्रकृति ही अस्तित्व सर्वस्व अस्तित्व कैसा है ? सिद्ध हो जाता है। और अस्तित्व कितना है कि आवश्यकता सिद्ध नहीं होती। आवश्यकता उपयोगिता और प्रयोजनीयता के अर्थ में ही पहचान होती है। सत्ता अरूपात्मक अस्तित्व, संपृक्त प्रकृति रूपात्मक अस्तित्व, प्रकृति अनन्त इकाईयों का समूह है। किसी भी एक इकाई का नाश नहीं होती। सत्ता में संपृक्त प्रकृति सत्ता में अनुभव पर्यन्त विकास के लिये बाध्य है। विकास स्वयं में कम है। कम स्वयं में नियति है। नियति स्वयं व्यवस्था है। सत्ता में सम्पूर्ण प्रकृति नियंत्रित है। नियम ही न्याय, न्याय ही धर्म, धर्म ही सत्य, सत्य ही ईश्वर, ईश्वर ही आनन्द है। आनन्द ही जीवन है। जीवन ही नियम है।

मूल्यांकन : स्वानुशासन उत्पादन क्षमता और शिक्षा प्रदान करने की अर्थात आज्ञा पालन कराने की क्षमता का मूल्यांकन।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

विज्ञान के सूत्र
(जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान) "कर्म दर्शन" से

कक्षा–1

विज्ञान के सूत्र	पृष्ठ संख्या
1. धरती, पहाड़, जंगल, नदी, नाला, जीव–जंतु की पहचान	94
2. ठोस, तरल, विरल	107
3. ऊष्मा का परिचय	107
4. गति	112
5. सूर्य	113
6. ऋतु–पहचान	177
7. देश	183
8. दिशा	183
9. मानव शरीर– ज्ञानेन्द्रियाँ	200
10. भार	–

जीयन जागृति ही स्वानुशासन का जागृति की अपेक्षा ही अनुशासन का और जागृति का भास ही आज्ञा पालन का आधार होने का पाठ।

मूल्यांकन – स्वानुशासन व उत्पादन क्षमता का मूल्यांकन।
कक्षा 13

सत्ता में संपृक्त प्रकृति अस्तित्व सर्वस्व। अस्तित्व न बढ़ती है न घटती है।अरूपात्मक अस्तित्व में ही सम्पूर्ण रूपात्मक अस्तित्व कियाशील है। सम्पूर्ण ईकाईयों का परस्परता में अरूपात्मक दिखाई पड़ती है। मूल्य स्वयं में जैसा विश्वास स्वयं में जैसा, अरूपात्मक अस्तित्व है। विश्वासपूर्वक ही परस्पर मनुष्य सह– अस्तित्वशील है। मनुष्य ही मनुष्य का विकास और ह्यास का प्रधान कारण है। जड़ चैतन्यात्मक प्रकृति सत्ता में नियंत्रित है। सत्ता ही व्यवसाय काल में नियम, व्यवहारकाल में न्याय, विचार काल में समधान, अनुभवकाल में सत्य के नाम से जाना जाता है का प्रवोधन का पाठ। शिक्षा प्रदान करने के लिये योग्यतानुसार उचित कक्षाओं में अवसर प्रदान करने की व्यवस्था का पाठ और अभ्यास।

सत्य–सत्ता में संपृक्त प्रकृति, में गर्भित होने फलतः सत्य में अनुभूत होने पर्यन्त विकास के लिये बाध्य होने का पाठ।

मूल्य –
1–धीरता
2–वीरता
3–उदारता
4–दया
5–कृपा

मध्यस्थ किया और मध्यस्थ शक्ति का प्रवोधन

प्रत्येक परमाणु के मध्य मे स्थित अंश मध्यस्थ किया होने का पाठ।

मध्यस्थ किया में ही मध्यस्थता शक्ति का नित्य प्रसारण होने का पाठ।

प्रत्येक इकाई सत्ता में संपृक्त होने के कारण उर्जामय फलतः आकर्षण विकर्षण वादी गति कार्य विन्यास प्रवोधन।

आकर्षणवादी कार्य विन्यास ही अंशो को परमाणु में गठित होने, परमाणुवें, अणुवें, कण और कई कण का संयुक्त स्वरूप संगठित पदार्थ पिण्ड के रूप में होने का पाठ चाहे प्राण कोशिकाएं हो या निष्प्राण कोशिकाएं। यह सभी रासायनिक भौतिक सीमा में होने और जड़ चैतन्य का संयुक्त आकार मनुष्य इन सबका दृष्टा होने का पाठ तथा सम्पूर्ण माप दण्ड का निर्माण मनुष्य होने का पाठ। उत्पादन कम मे विज्ञान व तकनीकी पूर्वक कुशलता निपुणतावादी पद्धति से कर्माभ्यास।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

कक्षा–4

विज्ञान के सूत्र		पृष्ठ संख्या
01	जलने व जलाने वाला	107
02	आवेश–ताप–स्वभाव गति	107
03	सूर्य के सम्मुख–धरती–अंडाकार गतिपथ	110
04	पदार्थावस्था–प्राणावस्था–जीवावस्था	201–85
05	कोयला–पेट्रोल	113
06	धरती का तापग्रस्त होना	118
07	स्थिति में बल–गति में शक्ति, बल गति में अविभाज्य	122
08	मात्रा के साथ रूप–गुण–स्वभाव–धर्म	128
09	जल व उनके स्रोत–पाताल जल स्रोत	119
10	अंडज–पिंडज–स्वेदज	85
11	भूखे–अजीर्ण व तृप्त परमाणु गठनशील–गठनपूर्ण	88
12	दबाव को बल के रूप में, गति तरंग–प्रवाह को शक्ति रूप में	150
13	जानना–मानना–पहचानना–निर्वहन करना	146
14	कोण	183
15	काल	196

कक्षा–2

विज्ञान के सूत्र		पृष्ठ संख्या
01.	पदार्थावस्था की पहचान	107
02.	ऊष्मा के कारण वस्तुओं का फैलना	107
03.	स्थिति–गति	122
04.	वस्तु	126
05.	पूरकता	158
06.	व्यापक वस्तु व एक–एक वस्तु	178
07.	दूरी	183
08.	मानव शरीर, सरचना–विरचना	200

कक्षा–5

विज्ञान के सूत्र		पृष्ठ संख्या
01.	परमाणु संरचना एवं अणु	78–81
02.	सपृक्तता	80
03.	पुष्टि तत्त्व, रचना तत्त्व, रासायनिक ऊर्मि	83
04.	प्राण कोष–प्राण सूत्र	83
05.	रचना में विकास क्रम	84
06.	मधस रचना	84
07.	गठनपूर्ण परमाणु–परिणाम का अमरत्व	86
08.	विकिरणीय परमाणु–अजीर्णता	87
09.	बल–शक्ति–अक्षयता	88
10.	भौतिक–रासायनिक–जीवन क्रियाओं के मूल में परमाणु	88
11.	चार पद, चार अवस्था	100
12.	त्व सहित व्यवस्था	100
13.	पाँच बल–पाँच शक्ति–दस क्रियाएं	102–106
14.	चारो अवस्थाओं में स्थिति गति	122–123
15.	यंत्र प्रमाण	125
16.	प्रत्येक–एक–एक भीगा–बल संपन्न ऊर्जा– चुम्बकीय बल	128
17.	परमाणु अंशों का परस्पर पहचानना व निर्वाह	129
18.	हर मात्रा स्थिति–गति में होना	132
19.	प्रकाश–प्रतिबिम्बन	136
20.	क्रिया=श्रम–गति–परिणाम	136
21.	उर्वरकता	139
22.	शरीर रचना–मानव शरीर की उत्पत्ति	140–41
23.	कोयला–पेट्रोल, ऊष्मा संतुलन	114
24.	धरती के बढ़ते ताप के दुष्परिणाम	116
25.	कोयला एवं खनिज तेल का विकल्प	119
26.	पाताली जल स्रोत कम होना व उसके दुष्परिणाम	120
27.	आवर्तनशीलता	120
28.	धरती का सुरक्षा कवच–ओजोन परत	120

कक्षा–3

विज्ञान के सूत्र		पृष्ठ संख्या
01.	मानव जीवन एवं जीवन का संयुक्त रूप	89
02.	ताप का परावर्तन	108
03	पहचानना–निर्वाह करना	108
04.	ऋतु परिवर्तन	110
05.	पदार्थावस्था–प्राणावस्था–परस्पर पूरकता	115
06.	नियम–नियंत्रण–संतुलन	115
07.	जल व जल के स्रोत	119
08.	स्थिति व गति अविभाज्य	122
09.	मूल मात्रा परमाणु	128
10.	रूप = आकार–आयतन+घनत्व	136
11.	पूरकता एवं उपयोगिता	156
12.	दूर गमन–दूर श्रवण–दूर दर्शन	168